शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

उद्धार को समझना

अध्याय 1 : मैं अपने उद्धार के बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकता हूँ?

परिचय

उद्धार को समझना नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही जीवन के बुनियादी तत्व उद्धार के बारे में बताती है और बताती है कि मसीही बनने वाले व्यक्ति के जीवन में कौन से लक्षण दिखाई देते हैं। दूसरों को प्रभावशाली ढंग से सुसमाचार सुनाने से पहले इन अध्यायों का समझना प्रत्येक विश्वासी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक अध्याय में बाइबल के दृष्टिकोण के अनुसार एक विषय का परीक्षण किया गया है जिसमें इन सिद्धान्तों पर चर्चा करने के लिए समय को और हमारे जीवन में उन सिद्धान्तों को इस्तेमाल करने के तरीकों को भी शामिल किया गया है। यह माड्यूल नये विश्वासियों को शिक्षा देते समय यह सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं कि वे उस विषय को समझ गये हैं।

अध्ययन कुँजी को प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस मकसद से तैयार किया गया है ताकि वे स्वयं विशेष शिक्षा का गहनता से अध्ययन कर सकें। www.dehindi.org पर प्राप्त वीडियो और ऑडियो को शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक शिक्षा सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

उद्धार को समझना

अध्याय 1 : मैं अपने उद्धार के बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकता हूँ?

यह किस विषय में है?

यह अध्याय परीक्षण करता है कि बाइबल उद्धार के बारे में क्या कहती है और हम किस प्रकार सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारा उद्धार हो गया है। कई बार हमें सन्देह, और भय की अनुभूती होती है जिसकी वजह से हम में आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। यह अध्याय हमें परमेश्वर के वचनों द्वारा समझने में सहायता करता है कि हम अपने पापों की क्षमा के लिए किस प्रकार यीशु मसीह पर भरोसा कर सकते हैं और किस प्रकार दूसरों को उनके उद्धार के बारे में सुनिश्चित करा सकते हैं।

जैसा आप जानते हैं...

यह अध्याय हमें बताता है कि 'उद्धार' या 'बच जाने' शब्दों से मसीहियों का क्या मतलब होता है। यह उस व्यक्ति के जीवन में होने वाला मौलिक बदलाव होता है जिसके कारण उसके जीवन का हर हिस्सा प्रभावित हो जाता है। लेकिन यह बदलाव बाहरी होने की बजाय मनुष्य के गहन भीतरी भाग में होता है इसलिए लोगों को सन्देह होने लगता है कि पता नहीं उन्हे वास्तव में उनके पापों से छुटकारा मिल गया है या नहीं। पश्चातापी हृदय में परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाने की इच्छा उठती है, जो कि अपने आप में एक अच्छा चिन्ह है। हमारे लिए दूसरों को सुसमाचार सुनाने से पहले अपने उद्धार के बारे में जानना और परमेश्वर के वचनों से सुनिश्चित होना बहुत ज़रूरी है। यदि यह आपके हृदय की भी इच्छा है कि आपका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ अच्छा हो और आपने इसे नहीं किया है, तो आप अभी प्रार्थना क्यों नहीं करते? यह अध्याय आपको बताएगा कि किसी व्यक्ति को उद्धार पाने के लिए उसके जीवन में कैसे लक्षण दिखने चाहिए।

प्रारंभ

1 क्या कभी आपको अपने जीवन में यह सन्देह हुआ कि आप पता नहीं आपका उद्धार हुआ है कि नहीं? आप इसके विषय में क्या किया?

2 उद्धार प्राप्त करे हुए व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं? वे नियमित रूप में किस प्रकार के काम करेंगे? क्या यह सम्भव है कि एक व्यक्ति उसी तरह के काम तो करे परन्तु फिर भी उसका उद्धार न हुआ हो या उसमें सच्चा विश्वास न हो? इसमें क्या फरक है?

अध्ययन

❖ **उद्धार का निश्चय :** हर एक की जिन्दगी में ऐसे सन्देहपूर्ण क्षण आते हैं जब उन्हें परमेश्वर से उत्तर प्राप्त करने की ज़रूरत होती है। यदि आप अपने उद्धार पाने और अपने मसीही होने को लेकर दुविधा में हैं तो यह अध्याय कदम बढ़ाने के लिए बहुत अच्छा स्थान है। यदि आप किसी सन्देहात्मक परिस्थिति का सामने करने वाले व्यक्ति या किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत कर रहे हैं जो नया नया विश्वासी है तो उसके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि वह उद्धार पा चुका है। यह अति महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिसे हमें कभी नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिए।

हमारे उद्धार का निश्चय हमें परमेश्वर के वचन और हमारे परिवर्तित जीवन से प्राप्त होता है। हमारा उद्धार, चर्च जाना या दया दिखाने के लिए किये गये कामों पर आधारित नहीं होता। न ही यह हमारी भावानावों पर आधारित होता है जिनका आना जाना लगा रहता है।

❖ **बाइबल से निश्चय :** सबसे पहले हम अपने उद्धार के निश्चय के लिए अपनी बाइबल में देख सकते हैं। यह विश्वास करना बहुत ज़रूरी है कि परमेश्वर का वचन सत्य और जीवित है। हम बाइबल पर क्यों भरोसा कर सकते हैं? यह पुस्तक दुनिया की बाकि पुस्तकों से बिल्कुल अनोखी है। यह पुस्तक परमेश्वर द्वारा प्रेरित और उद्धार व मसीही जीवन जीने का आधार है। इसे 40 भिन्न लेखकों द्वारा 1500 वर्षों में लिखा गया – इसके बावजूद भी इस में पाये जाने वाले लेख पूरी तरह से एक दूसरे से मेल खाते हैं।

➢ निम्नलिखित पद हमें बाइबल के मूल के बारे में बताते हैं और बताते हैं कि हम क्यों इस पर भरोसा कर सकते हैं। वचनों को पढ़कर लिखें कि आपको इस से क्या समझ में आया :

2 पतरस 1:20–21	
2 तीमुथियुस 3:16–17	
1 थिस्सलुनीकियों 2:13	
यूहन्ना 20:31	
भजन 119:105	

जी हाँ! बाइबल मात्र लोगों के शब्दों में लिखी गयी पुस्तक नहीं है। बाइबल खुद हमारे लिए दिया गया परमेश्वर का वचन है। जितना ज्यादा आप इसे पढ़ते हैं उतना ही ज्यादा आपको इसकी विश्वसनीयता और अनोखेपन का पता चलेगा।

❖ **बाइबल उद्धार के बारे में क्या कहती है :** हमारे लिए दिये गये परमेश्वर के वचनों में उद्धार के मार्ग की रूपरेखा और उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक कामों के बारे में बताया गया है। बाइबल हमारी पापपूर्ण परिस्थिति और हमें बचाने के लिए किये गये परमेश्वर के कामों के बारे में बताती है। इस विषय पर बाइबल क्या कहती है जानने के लिए निम्नलिखित वचनों को देखें।

➢ निम्नलिखित वचनों को पढ़कर लिखें कि वे क्या कहते हैं। यह बाइबल में लिखा हुई उद्धार की योजना है :

कुलुस्सियों 1:16	
रोमियों 3:23	
रोमियों 6:23	
यूहन्ना 3:16	
1 यूहन्ना 1:9, प्रेरितों 2:38	

❖ **बाइबल के अनुसार एक व्यक्ति कब उद्धार पाता है?** बाइबल में बहुत से पद हैं जो हमें बताते हैं कि कोई व्यक्ति कब उद्धार पाता है। हो सकता है कि किसी नये विश्वासी को ये वचन कुछ दुविधाजनक प्रतीत हो लेकिन इसमें एक स्पष्ट तरीका पाया जाता है। प्रारम्भिक मसीहियों को भी इस विषय को लेकर खासी तकलीफ़ हुई, जिसकी वजह से प्रेरित यूहन्ना ने उन समस्याओं को सुलझाते कलीसियाओं को बहुत से पत्र लिखे। उन में से एक पत्र आपकी बाइबल में –1 यूहन्ना है। यह पुस्तक कुछ प्रश्नों को उत्तर देने के लिए ही लिखी गयी थी। निम्नलिखत विषय सूची को देखें और उनसे सम्बन्धित वचनों को पढ़ें।

- **उन्होंने अपने पापों का अंगीकार किया** (प्रेरितों 2:38, लूका 24:46–48, 2 कुरिन्थियों 7:10)
- **उन्होंने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है** (यूहन्ना 20:31, यूहन्ना 3:36, यूहन्ना 5:24)
- **उन्होंने यीशु को प्रभु माना** (रोमियों 10:9–10, 1 कुरिन्थियों 12:3)
- **उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना** (1 यूहन्ना 5:3, 1 यूहन्ना 5:18, यूहन्ना 14:15)
- **वे परमेश्वर की सन्तानों को प्रेम करते थे** (1 यूहन्ना 5:1–2, 1 यूहन्ना 1:17, 1 यूहन्ना 4:7, यूहन्ना 13:34–35)
- **उन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया** (प्रेरितों 2:38, इफिसियों 1:13, तीतुस 3:4–6, रोमियो 8:16)

➢ अपने शब्दों में बताएं : एक व्यक्ति को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?

➢ अपने आप से पूछें : क्या मैंने उपरोक्त कामों को किया है? क्या ये सारी बातें मेरे लिए सत्य हैं?

सच्चाई के साथ विश्वास करना कि यीशु ही हमारे जीवन का स्वामी है और उसकी दी गयी प्रत्येक आज्ञा को पूरा करने का काम हम परमेश्वर की सहायता के बिना नहीं कर सकते हैं। हम कई बार अपने मुँह से कहते तो हैं परन्तु उसे अपने हृदय से मानते नहीं हैं। इसी प्रकार से परमेश्वर की आज्ञापालन करने की इच्छा, दूसरों को प्रेम करना, दूसरों को अपने से बेहतर समझना, हमारे भीतर पवित्र आत्मा द्वारा किये जाने वाले कार्यों का प्रमाण हैं। यदि ये सारी बातें आपके बारे में सही हैं – तो आप अपने उद्धार को लेकर सुनिश्चित हो सकते हैं। इसके अलावा हम एक और क्षेत्र को देखेंगे जो हमें उद्धार के निमित्त निश्चय प्रदान करता है।

❖ परिवर्तित जीवन से निश्चय : लोग अपने असली स्वभाव के बिल्कुल विपरीत दिखावा करते हुए कुछ समय तक अपने आप को और अपने आस पास के लोगों को मूर्ख बना सकते हैं। लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा परिवर्तित होने वाले जीवन देखते ही बनता है। बाइबल उद्धार पाए हुए और नहीं पाए हुए व्यक्ति का उल्लेख करते हुए बहुत कड़े शब्दों का इस्तेमाल करती है। उद्धार पाया हुआ व्यक्ति जीवन में प्रवेश कर चुका है – जबकि पहले वह आत्मिक रूप में मृतक था। (इफिसियों 2:1–10 पढ़ें)। मृतक व्यक्ति और जीवित व्यक्ति में असंख्य विविधताएं होती हैं! जब हम उद्धार पाते हैं, हम जीवन की प्राप्ती करते हैं। हो सकता है कि हमारी परिस्थितियाँ परिवर्तित न हो परन्तु हमारा मन और हमारा हृदय बदल जाता है। इसके कारण हम हर एक परिस्थिति में अलग ढंग से व्यवहार करने लगते हैं। हम पूरी तरह से परिवर्तित व्यक्ति बन जाते हैं। यह बदलाव प्रारम्भ में तो छोटा ही प्रतीत होता है परन्तु यदि इसे समय दिया जाए तो वह बड़ा परिवर्तन बन जाता है! आइये उन बदलावों पर ध्यान दें जो बाइबल अनुसार उद्धार पाने वाले व्यक्ति के जीवन में प्रकट होते हैं :

❖ **हम मृतक थे परन्तु अब जीवित हो गये हैं :** मसीह को स्वीकार करने से पहले और बाद के जीवन का ''जीवन'' के रूप में वर्णन किया जाता है। इसका अर्थ है कि जो अंश हमारे भीतर मृतक हो गये थे अब जीवित हो जाएंगे, पाप के प्रति संवेदनशीलता, विवेक, दूसरों को प्रेम करने और उनकी सेवा करने की इच्छा विकसित होने लगेगी। हमारे विश्वास में छोटे होने पर इसकी शुरूआत छोटी हो सकती है – परन्तु यह लगातार बढ़ेगा।

➢ निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और लिखें कि इनसे आप क्या समझते हैं।

यूहन्ना 5:24	
इफिसियों 2:4	
रोमियों 6:4	

❖ **हमें नया हृदय और मन दिया गया है :** उद्धार प्राप्त करने से पहले हम न तो परमेश्वर की बातों को नहीं समझ पाते थे, और न ही परमेश्वर की इच्छाओं और हमारी इच्छाओं में समानता पायी जाती थी। क्या इसे आपने अपने जीवन में अनुभव किया है? परमेश्वर ने हमसे नया हृदय और नये मन की प्रतीज्ञा की है। परमेश्वर के वचनों को समझने लगना और सही चीज़ों की इच्छा करना हमारे भीतर परमेश्वर के कार्यों का प्रमाण है।

➢ निम्नलिखित वचनों को पढ़कर लिखें कि ये वचन आपसे क्या कहते हैं :

2 कुरिन्थियों 5:17	
यहेजकेल 36:26	
2 कुरिन्थियों 4:4	

❖ हमें पवित्र आत्मा दिया गया है : परमेश्वर के द्वारा प्रदान किया गया वरदान – पवित्र आत्मा है – जो हम में निवास करने के लिए आता है। वह हमको बहुतायत से सशक्त बनाता और हमारा मार्गदर्शन करता है। बाइबल में हम पड़ते हैं कि जब यीशु मसीह अपने चेलों को अपने प्रस्थान के लिए तैयार कर रहे थे तो उसके चेले बहुत परेशान हो रहे थे। वे वर्तमान में हम जैसे लोगों के समान–दुविधा में, अकेले और अनिश्चित थे। लेकिन यीशु ने हमारे लिए एक सहायक अर्थात पवित्र आत्मा भेजने की प्रतीज्ञा की। हमारे जीवन के परिवर्तित होते समय हम अपने भीतर पवित्र आत्मा के कामों के प्रमाणों को हमारे भीतर काम करते हुए देख सकते हैं, और हम अधिकाई से यीशु मसीह के समान बन जाते हैं। हमें हमारे जीवन में ''आत्मा के फलों को बढ़ते हुए देखना चाहिए' – जो आनन्दित, धीरजवन्त और प्रेमी होने की योग्यता होती है। यह पवित्र आत्मा हमें हमारे उद्धार और भविष्य में अनन्त जीवन के वरदान के रूप में दिया गया है।

➢ निम्नलिखित पदों को पढ़े और लिए कि इनसे आपको क्या समझ आता है :

प्रेरितों 2:38	
रोमियो 8:16	
गलातियों 5:22–23	
यूहन्ना 14:15–17, 26	

➢ क्या ये बातें आपके व्यक्तित्व का वर्णन करती हैं? क्या आप अपने अन्दर नये जीवन, परिवर्तित हृदय और पवित्र आत्मा की सहायता के प्रमाण देख पाते हैं?

यदि आप अपने जीवन में इन प्रमाणों को नहीं देख पा रहे हैं तो आप दूसरों से अपने बारे में पता कर सकते हैं। लेकिन आपने अभी–अभी अपने मसीही जीवन का प्रारम्भ किया है तो इन बदलावों को आने में समय लगेगा। इन वचनों के साथ समय बितायें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको इन वचनों को समझने में सहायता करे।

- **परमेश्वर के प्रेम में बने रहें :** इस अध्याय में प्राप्त पद उद्धार की खोज करने वाले को सुनिश्चित करने में सक्षम हैं। परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने के द्वारा हम पुनः जीवित हो जाते हैं। हम उसकी सन्तान बन जाते हैं। हम वर्तमान में हमारे जीवन और अनन्त काल के लिए हमारे प्राणों को सम्भालने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। हमें समय समय पर अपने उद्धार की याद दिलाने और परमेश्वर की नज़दीकी में बने रहने के लिए लगातार उसकी खोज करने की आवश्यकता होगी।

  - उद्धार के निश्चय की खोज करने वाले व्यक्ति को बताने के लिए तीन बातें है। निम्नलिखित वचनों को पढ़कर लिखें कि वे क्या कहती हैं।

यूहन्ना 10:28	
1 यूहन्ना 3:24	
यहूदा 1:20–24	

सारांश

- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सन्देह पूर्ण समय या ऐसा समय आता है जब उन्हे अपने उद्धार के प्रति निश्चय को ढूंढ़ना जरूरी होता है।
- हमें दो चीजों से उद्धार का निश्चय प्राप्त होता है : परमेश्वर के वचनों से, तथा परिवर्तित जीवन के प्रमाणों से।
- हमारे उद्धार का निश्चय हमें अपने कामों या सामाजिक कामों के द्वारा प्राप्त नहीं होता। और न ही यह हमारी अनुभूतियों पर आधारित होता है।
- हम बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं।
- बाइबल बताती है कि एक व्यक्ति किस प्रकार उद्धार पा सकता है।
- जब कोई व्यक्ति अपने पापों का अंगीकार करता है, विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, स्वीकार करता हे कि यीशु ही प्रभु है, अपने सम्पूर्ण ह्रदय से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, परमेश्वर की सन्तानों को प्रेम करता है, और पवित्र आत्मा प्राप्त कर लेता है, तो उसका उद्धार हो चुका है।
- हम अपने परिवर्तित जीवन से उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो सकते हैं क्योंकि हम पहले मृतक थे परन्तु अब जिवित हो गये हैं। हमें नया ह्रदय, मन और पवित्र आत्मा मिल गया है।
- हमारे उद्धार को सुरक्षित रखने के लिए हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, परमेश्वर के नज़दीक बने रहकर उसकी आज्ञाओं को पालन करना चाहिए, और दूसरों पर करूणा करके परमेश्वर के प्रेम में बने रहना, सुसमाचार प्रचार करना और हमें ठोकरों से बचाने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

चिन्तन करने योग्य प्रश्न

1. जिन लोगों को अपने विश्वास में सन्देह है आप उनको किस प्रकार सलाह देंगे? उनके विश्वास को मज़बुत बनाने के लिए आप उन्हें क्या सुझाव देंगे?

2. आप अभी अपने उद्धार के बारें में क्या महसूस करते हैं? परमेश्वर ने आपको अपने वचनों और पवित्र आत्मा द्वारा किस प्रकार उद्धार का निश्चय प्रदान किया?